ISSN: 0973-0583

बौद्ध दर्शन एवं मूल्य शिक्षा का अवलोकन

राकेश कुमार सिंह

शोध छात्र, शिक्षा विभाग, कैपिटल विश्वविद्यालय, कोडरमा

सार

बौद्ध-संस्कृति और सभ्यता में सहिष्णुता और समझदारी की यह भावना शुरू से ही रही हैं। इसलिए बौद्ध धम्म के प्रचार में एक भी घटना किसी को दु:ख देने या एक भी बूंद खून बहाने की नहीं घटी। वह शांति सारे एशिया महाद्वीप में फैल गयी। किसी भी रूप में किसी भी कारण या किसी भी बहाने हिंसा बुद्ध की शिक्षाओं के विपरीत है। मूल्य-शिक्षा समाज में मूल्यों के सम्प्रेषण से जुड़ा हुआ विषय है। अभी तक सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश जगत् ही मूल्य शिक्षा का सबसे प्रभावी स्रोत था। परन्तु मूल्य संचारण की दृष्टि से इसके कमजोर पड़ने के कारण औपचारिक शिक्षा प्रणाली में इसे लाने का प्रयत्न शुरू हुआ। मूल्य-शिक्षा के संदर्भ में प्राय: हम विश्व दृष्टि को नजरअंदाज करते हैं। मूल्यों को विश्व दृष्टि से बिल्कुल अलग कर के देखना उसे यांत्रिक बना देने वाला होगा। मानवीय मूल्य किसी-न-किसी विश्वदृष्टि के परिप्रेक्ष्य में ही ग्रहण हो पाता हैं और उनका औचित्य भी स्थापित हो पाता है। बौद्ध विश्वदृष्टि आधुनिक संदर्भ में बेहद उपयोगी है। मूल्य वह है जो मानव इच्छा की पूर्ति करता है। हमारा समाज सांस्कृतिक रूप से बहुआयामी है, इसलिए शिक्षा के द्वारा उन सार्वजनिक और शाश्वत् मूल्यों का विकास होना चाहिए जो हमारे लोगों को एकता की ओर ले जा सके। विश्वदृष्टि में बौद्ध शिक्षा आधुनिक संदर्भ में बेहद उपयोगी है।

शब्द कुँजी: सहिष्णुता, शाश्वत् मूल्यों, सांस्कृतिक

परिचय:

बौद्ध धम्म भारतीय धम्म है। यही एक मात्र ऐसा धम्म है, जिसने सारे संसार को भारत की संस्कृति, सभ्यता (Culture & Civilization) का वास्तविक स्वरूप प्रदान किया है। मानवता के प्रति दया, करुणा मैत्री का संदेश इसी धम्म ने दिया। इस धम्म के कारण भारत को विश्व गुरु कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ। भगवान बुद्ध जिसे धम्म कहते हैं वह अन्य सभी धर्मों से सर्वथा भिन्न है। भगवान बुद्ध ने कहा कि जाति नहीं, असमानता नहीं, ऊँच-नीच की भावना नहीं होनी चाहिए। उनका सिद्धान्त था कि किसी आदमी के जन्म से नहीं, बल्कि उसके कर्म से ही उसका मूल्यांकन किया जाना चाहिए। तथागत बुद्ध के अनुसार धम्म के दो प्रधान तत्व हैं। प्रज्ञा तथा करुणा। इसके बिना न समाज जीवित रह सकता है, न समाज में समता और (मैत्री) धम्म स्थापित हो सकती है और न उन्नति ही हो सकती है। प्रज्ञा और करुणा का अनिवार्य सम्मिश्रण ही तथागत का धम्म है। धम्म में जो नैतिकता है उसका सीधा मूल स्रोत आदमी को आदमी से मैत्री करने की आवश्यकता है। अपने भले के लिए ही यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति सभी जीवों से मैत्री करें।

शिक्षा किसी भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र के विकास और उत्थान के लिए सबसे महत्वपूर्ण कुंजी है। बच्चे राष्ट्र का भविष्य हैं, प्रभावी, एकीकृत और उदार शिक्षा के माध्यम से हम छात्रों में एक दूसरे के प्रति स्वीकृति और अपनेपन की भावना पैदा कर सकते हैं। ये छात्र देश के जिम्मेदार नागरिक बनेंगे जिन्हें अपने देश पर गर्व होगा और वे राष्ट्रीय एकता के मूल्य को जानेंगे। शिक्षक राष्ट्र निर्माण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। देश, राष्ट्रीय प्रतीकों और सभी पृष्ठभूमि के लोगों के प्रति शिक्षकों का सम्मानपूर्ण आचरण छात्रों द्वारा देखा और सीखा जाता है। सामान्य रूप से 'मूल्य' शब्द उस गुणात्मक महत्त्व या अभिप्राय को अभिव्यक्त करता है जो हम विचारों, भावनाओं, अनुभवों एवं क्रियाकलापों को प्रदान करते हैं। मूल्य वे मूल्यांकन का मानक हैं जिनका प्रयोग सही-गलत, उचित-अनुचित, वांछनीय-अवांछनीय आदि का निर्णय लेने के लिए किया जाता है। मानवीय मूल्य किसी-न-किसी विश्वदृष्टि के परिप्रेक्ष्य में ही ग्रहण हो पाता है और उनका औचित्य भी

स्थापित हो पाता है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ इच्छाएँ होती हैं। व्यक्ति की कल्याणकारी इच्छाएँ एवं आकांक्षाएँ मूल्य के रूप में संज्ञापित की जाती है अर्थात् मूल्य वह है जो मानव इच्छा की पूर्ति करता है। यह एक चिर स्थायी विचार, एक विशिष्ट प्रकार का आचरण अथवा जीवन का एक उच्चतम बिन्दु कहा जा सकता है। मूल्य को अनेको विद्वानों ने स्पष्ट करने का प्रयास किया है। शिक्षा नीति (1986) में मूल्य संकट एवं आवश्यकता को रेखांकित करते हुए इस बात पर गहरी चिन्ता प्रकट की जा रही है कि जीवन के लिए आवश्यक मूल्यों का ह्वास हो रहा है और मूल्यों पर से लोगों का विश्वास उठता जा रहा है। शिक्षा क्रम में ऐसे परिवर्तन की जरूरत है, जिससे सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षा एक सशक्त साधन बन सके। इन मूल्यों से धार्मिक अन्धविश्वास,हिंसा और भाग्यवाद का अन्त करने में सहायता मिलनी चाहिए।

मूल्य शिक्षा की अवधारणा:

मूल्य शिक्षा एक व्यापक एवं विवादाग्रस्त सम्प्रत्यय है। विवादग्रस्त इसे इसलिए कहा जा सकता है, क्योंकि मूल्य शिक्षा के सम्बन्ध में मूल्यविदों में मतैक्य नहीं हो पाया है, न ही मूल्य शिक्षा की कोई ठोस धरातल ही मिल सका है। मूल्यों की सूची, उनके शिक्षण, पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में अभी तक दिग्भ्रमित स्थिति बनी हुई है। मूल्य शिक्षा को व्यापक एवं विस्तृत इसलिए कहा जा सकता है कि इस पर विविध धार्मिक सद्ग्रन्थों, शिक्षाविदों, मूल्य-मीमांसकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से मूल्य शिक्षा में एक हलचल उत्पन्न कर दी है, किन्तु फिर भी मूल्य शिक्षा को विविध विचारों के आलोक में समझने का प्रयास प्रत्येक शिक्षा प्रेमी को करना आज के परिप्रेक्ष्य में परमावश्यक है। मूल्य शिक्षा सद्गुणों की शिक्षा है। इस विचारधारा के आदि प्रवर्तक प्लेटो को माना जाता है। प्लेटो सद्गुण को आत्मा का गुण माना है जो व्यक्ति जितना अधिकतम इसकी प्राप्ति आसानी से कर लेता है, वह उतना ही अधिकतम सनातन मूल्यों की प्राप्ति आसानी से कर लेता है। प्लेटो ने चार प्रकार के सद्गुण बताये हैं- संयम, धैर्य, ज्ञान और न्याय। इस प्रकार प्लेटो के अनुसार इन सद्गुणों की शिक्षा देना ही मूल्य शिक्षा माना जा सकता है, क्योंकि मूल्य और सद्गुण में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। प्रो0 जे0 एस0 ब्रूबेकर ने लिखा है- सद्गुण नैतिक गुण है। यह योग्य संकल्प के चिन्ह होते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि जो चीज अच्छी है जिसका रिश्ता योग्यता और संकल्प से है, उसका मूल्य अवश्य होगा। अतएव मूल्य का आधार सद्गुण है। यदि सद्गुणों को शिक्षा दी जायेगी, तो उसमें मूल्य शिक्षा अवश्य निहित होगी।''

शैक्षिक मूल्य एवं मूल्य शिक्षा:

मूल्य एवं शिक्षा के आपसी सम्बन्ध को देखने के बाद यह स्पष्ट होता है कि दोनों एक दूसरे के पूरक है। मूल्यों का शिक्षा में अनुस्थापना ही मूल्य शिक्षा कहलाता है। आज कल मूल्य शिक्षा के लिए शैक्षिक मूल्य शब्द का प्रयोग किया जाता है। वस्तुत: बहुत से ऐसे विचारक हुए हैं, जो उच्च कोटि के शिक्षाशास्त्री न होकर समाजशास्त्री, आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक वेत्ता, अर्थशास्त्री, पर्यावरणविद्, जनसंख्याविद् थे। उनके बहुत से विचार सर्वकालिक, जनहितकारी और कल्याण का दिग्दर्शन कराने वाले हैं। इनको आत्मसात् करने पर शिक्षा में उपस्थित विविध समस्याओं के समाधान में बहुत सहायता मिल सकती है। वैसे भी शिक्षाशास्त्र को विविध विषयों से सम्बद्ध अनुशासन शास्त्र माना जाता है। ऐसी परिस्थिति में जब विविध धर्मग्रन्थों, विचारकों की कृतियों में सन्निहित सर्वकल्याणकारी उपादेय तत्त्वों को निकालकर शिक्षा के विविध उपांगों में उसका प्रयोग कर शिक्षा की समस्याओं का समाधान किया जाता है तो वह 'शैक्षिक मूल्य' कहलाने लगता है। शैक्षिक मूल्य शिक्षा से जुड़े व्यक्तियों की इच्छा, संतुष्टि, कामना, उपयोगिता से सम्बन्धित होते हैं। यह शिक्षक-शिक्षार्थी की इच्छा-संतुष्टि कर उनको आत्मानुभूति प्रदान कर शिक्षा-प्रक्रिया से जोड़ता है। शैक्षिक मूल्यों से विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति निष्ठा, कर्त्तव्य परायणता, सृजनात्मकता, अभिप्रेरणा का संचार होता है और शिक्षा मूल्यवादी तत्त्वों से अभिभूत होकर व्यक्ति के बहुआयामी विकास में सहायक बनती है।

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

भारत अपनी धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक सम्पदा के कारण अत्यन्त प्राचीन काल से ही विश्व गुरु की मान्यता से जाना जाता रहा है किन्तु वर्तमान में वैज्ञानिक, भौतिकवादी, अस्तित्ववादी विचारों के प्रभाव में आकर यहाँ का जनमानस भारतीय आदर्शों, मूल्यों, मान्यताओं, आस्थाओं को विस्मृतकर पाश्चात्य जीवनशैली को आत्मसात करके उसे अपने जीवन का अभिन्न पहलू बना लिया है। इससे दया, सहयोग, प्रेम, सहअस्तित्व, परमार्थ, समता पर आधारित भारतीय समाज, संस्कृति एवं शिक्षा भी पाश्चात्यवादी दृष्टिकोण से आच्छादित हो गयी है। देश के प्राचीन आदर्शों, मूल्यों, मान्यताओं का अधोपतन होता जा रहा है।

व्यक्ति अशिष्ट व्यवहार कर रहा है। भारतीय शाश्वत, सनातन मूल्य निरन्तर कमजोर पड़ते जा रहे हैं। परिणामत: सर्वत्र अनेको दु:खदायी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही हैं। स्वार्थपरता, दंगा, अराजकता, असहयोग, मनोमालिन्य से व्यक्ति और समाज में कटुता, असंवादिता, द्वेष, ईर्ष्या का प्रादुर्भाव हो रहा है। ये समस्त राष्ट्र, समाज, परिवार के बहुमुखी विकास में अत्यन्त घातक हैं।

बौद्ध धर्म की शांति से सबके अनिवार्य संबंध भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। बौद्ध धर्म के गत पच्चीस सौ वर्षों के इतिहास में, जबकि यह संपूर्ण पृथ्वी के चतुर्थ भाग से अधिक प्रदेश में फैल गया, काफी श्रमसाध्य गवेषणा करने पर भी स्थानीय और अत्यंत अल्प महत्त्व के कुछ एक उदाहरण ही मिल सकेंगे जबकि बल का प्रयोग किया गया हो। बौद्ध धर्म के इतिहास का एक भी पृष्ठ ऐसा नहीं है जो रक्त-रंजित हो। बोधिसत्व मंजुश्री के समान बौद्ध धर्म के पास केवल एक ही तलवार है- प्रज्ञा की तलवार और उसका केवल एक ही शत्रु है- अज्ञान। यह इतिहास का साक्ष्य है, जिसका विरोध नहीं किया जा सकता। बौद्ध ध र्म और शांति का संबंध कारण-कार्य का संबंध है। बौद्ध ध र्म के प्रवेश से पूर्व तिब्बत, एशिया का सबसे बलवान सैनिक देश था। बर्मा, स्याम और कंबोडिया का पूर्वकालीन इतिहास बतलाता है कि यहाँ के निवासी अत्यंत युद्धप्रिय और हिंसक स्वभाव के थे। मंगोल लोगों ने एक बार संपूर्ण एशिया को ही नहीं, भारत चीन, ईरान और अफगानिस्तान को भी रौंद डाला था और यूरोप के दरवाजों पर भी वे जा गरजे थे। जापान की सैनिक-भावना को बौद्ध धर्म की पन्द्रह शताब्दियाँ भी अभी पूरी तरह परास्त नहीं कर सकती हैं। इस प्रकार बौद्ध धर्म और शांति का संबंध आकस्मिक न होकर अनिवार्य हैं।

'भारतीय जीवन मूल्य' नामक पुस्तक में प्रो0 पी0 मैनी का अभिमत है कि ''नैतिक जीवन मूल्यों में कतिपय पालन, ईमानदारी,त्याग, बलिदान, परोपकार, सेवा सदाचार, शिष्ट-व्यवहार, सत्य-निष्ठा, व्यवस्था के प्रति आदर आदि माने जाते हैं। समग्र रूप से प्राचीन भारतीय मूल्यों को अन्वेषित करने पर यह स्पष्ट होता है कि सभी व्यक्तियों को करणीय कर्त्तव्यों और व्यवहार में निम्नलिखित पाँच मूल्यों को अवश्य अपनाना चाहिए-

1. **सत्य** - सत्य ही विज्ञान है। सत्य पर ही सम्पूर्ण सृष्टि एवं मानव की सत्ता टिकी हुई है। सत्य से ही मनुष्य कार्य एवं व्यवहार को सही दिशा देने में समर्थ होता है। सत्य में अपरिवर्तनशीलता का गुण पाया जाता है। सत्य निराकार होता है यह अनुभूति एवं भावना का विषय है, इसमें बुद्धि एवं स्मृति का विशेष योगदान होता है,इसलिए प्रत्येक व्यक्ति सत्य का आलम्बन लेकर अपने चरित्र को उन्नत तथा नैतिकता को प्रखर बना सकता है। अत: प्रत्येक सद्चरित्रशाली व्यक्ति को 'सत्य' रूपी मूल्य को आत्मसात करना चाहिए।

2. **प्रेम**- 'प्रेम' वह मूल्य है, जिसमें अपरिमित आनन्द की अनुभूति होती है, इससे मनुष्य में दैवी शक्ति का अवतरण होता है। अपार शक्ति से वह अभिसिंचित होता है, प्रत्येक व्यक्ति प्रेम से प्रभावित होता है और दूसरों को प्रभावित करता है। प्रेम से सहयोग की प्रवृत्ति का विकास होता है, इससे प्रेरणा, अनुभूति, व्यवहार का परिमार्जन, शिष्टता आदि मूल्य स्वत: विकसित हो जाते हैं। अत: प्रत्येक व्यक्ति जीवन में 'प्रेम' रूपी मूल्य को आत्मसात् करके जीवन की कठिनाइयों को दूर कर सकता है।

3. **शान्ति**- शान्ति एक ऐसा मूल्य है जो स्थायी भाव के रूप में व्यक्तियों को आगे बढ़ने का मार्ग दिखाता है। मनुष्य जीवन में शान्ति की प्राप्ति अपनी इच्छा शक्ति के द्वारा आसानी से कर सकता है। शान्ति से प्रसन्नता की प्राप्ति और उत्साह से कार्य करने की प्रेरणा मिली है। भारतीय मनीषियों ने शान्ति की प्रतिष्ठा करने के लिए वैदिक मंत्रों का उद्घोष किया है। भगवान बुद्ध, महावीर, गुरु नानक आदि धर्म प्रवर्तकों ने अपने जीवन विचारों तथा प्राचीन भारतीय धार्मिक ग्रन्थों वेद, पुराण, उपनिषद्, त्रिपिटक में भी 'शान्ति' की प्रतिष्ठा हेतु दिव्य संदेश दिया गया है। वैश्विक विकास एवं भाईचारे की स्थापना में 'शान्ति' रूपी मूल्य अत्यन्त उपादेय है।

4. **धर्म**- मानव जीव को नियंत्रित एवं निर्देशित करने वाले मूल्यों में 'धर्म' का विशेष महत्व है। सत्य, प्रेम, शान्ति की परिणति धर्म से ही संभव है। धर्म से आशय किसी मत-मतान्तर, पूजा-पाठ, कंठी-माला को धारण करने से नहीं है, बल्कि धर्म नैतिक, चारित्रिक, मानवीय मूल्यों से आच्छादित कर्त्तव्य-कर्म व्यवहार करने से है। धर्म मानवीय करुणा, समानता का परिचायक है। व्यक्ति जहाँ भी कार्य करता है, वहाँ के कुछ नियम एवं मूल्य होते हैं। उनका पालन करना ही व्यक्ति का धर्म है।

5. **अहिंसा**- किसी भी व्यक्ति द्वारा मन, कर्म, वचन से किसी को कष्ट न पहुँचाना अहिंसा है। अहिंसा सभी प्राणियों के प्रति प्रेम एवं करुणा की भावना है। यह

मानवता की पराकाष्ठा है। इससे सभी के प्रति वात्सल्य एवं ममत्व की भावना बलवती होती है। अहिंसा रूपी मूल्य में अनेको सहायक मूल्य निहित होते हैं। जैसे– क्षमाशीलता, भक्ति, निष्ठा, समानता आदि।

बुद्ध का बौद्धिक दृष्टिकोण

संसार के विभिन्न धर्मों के संस्थापकों में सिर्फ गौतम बुद्ध ही ऐसे उपदेशक थे जिन्होंने अपने आप को शुद्ध और साधारण आदमी के अतिरिक्त और कुछ होने का दावा नहीं किया। दूसरे–दूसरे धर्म के उपदेशकों या तो ईश्वर थे या ईश्वर के अवतार या ईश्वर के पुत्र या ईश्वर से प्रेरित अपने को घोषित करते रहे परन्तु गौतम बुद्ध ही केवल अपने को मात्र मनुष्य ही मानते थे। वे अपने को किसी देवता या किसी बाहरी शक्ति से प्रेरित होने का भी दावा नहीं किया। उन्होंने अपने स्वंय अर्जित बुद्धत्व की उपलब्धि को मानवीय प्रयत्न तथा मानवीय बुद्धि द्वारा अर्जित कहा और कोई भी आदमी बुद्ध हो सकता है। प्रत्येक व्यक्ति में बुद्ध बनने की सामर्थ है। यदि वह इसके लिए कोशिश करें। वह अपनी मानवीयता से इतने परिपूर्ण थे कि बाद में लोगों ने उन्हें अतिमानव मान लिया।

बौद्ध धम्म के अनुसार मनुष्य सर्वोच्च है। वह खुद अपना स्वामी है। इसे संसार में इसके बराबर अन्य कोई शक्ति नहीं है जो इसके भाग्य का निर्णय करें। बुद्ध ने कहा कि व्यक्ति स्वयं अपना मालिक है। भला इसका दूसरा मालिक कौन हो सकता है। उन्होंने कहा किसी अन्य व्यक्ति से सहायता या शरण मत खोजो। उन्होंने प्रेरित किया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना विकास तथा मुक्ति का मार्ग स्वयं ढूँढना चाहिए क्योंकि मनुष्य में अपने को अपने परिश्रम तथा अपनी बुद्धि द्वारा सभी बंधनों, कुण्ठाओं, लालसाओं, वासनाओं से मुक्त करने की शक्ति हैं। तथागत कहते हैं कि तुम्हें स्वंय चलना हैं मै तो केवल रास्ता बताने वाला हूँ। मैंने इसे स्वयं ढूँढ़ा है। इस व्यक्तिगत जिम्मेवारी के सिद्धान्त पर ही उन्होंने अपने अनुयायियों को पूरी स्वतंत्रता दी। भगवान बुद्ध ने अपने अनुयायियों को स्वायतता दी थी। स्वतंत्रता आवश्यक है क्योंकि मानव की मुक्ति इसके सत्य को ढूढ़ने में है। बुद्ध ने कहा कि जो धर्म के इतिहास में अनोखा है वह उचित है कि तुम्हारे मन में शंकायें और सन्देह हैं क्योंकि संदिग्ध मामले में ही सन्देह पैदा होता है। तुम समाचारों, अफवाहों, परम्पराओं में मत जाओ, न धर्मशास्त्रों की बात करो, न सुन्दर चेहरा देखकर, न संभावनाओं पर बल्कि तुम स्वयं को जान लो और समझ लो कि अमुक बात अकुशल और गलत है तो इसे त्याग दो और जब तुम स्वयं देख लो कि अमुख मत कुशल और अच्छी है तो इसे स्वीकार करो और इसका अनुकरण करो।

बुद्ध की शिक्षा सामाजिक दुखों का औषधालय

इन्सान के जीवन में दो तरह के दुख आया करते हैं। एक प्राकृतिक दुख और दूसरा सामाजिक दुख। ठण्ढ से, लू से ठनका और सांप काटने से किसी को मर जाना प्राकृतिक दुख है। बुद्ध ने इन्सान को मिलने वाले प्राकृतिक दुखों के बचाव के लिए न कोई चिन्तन किया न उसके निवारण पर चिन्तन मनन किया। बुद्ध ने इन्सान के सामाजिक दुखों की उत्पति और उसके निवारण पर बहुत ज्यादा चिन्तन मनन किया और उपाय बताया। समाज में समता हो, भाईचारा हो, एक दूसरे से स्नेह और मैत्री हो, लोग काम में, बोली में, मन से हमेशा सत्य मार्ग को ही पकड़े, तब सामाजिक दुख कभी किसी को होने का सवाल ही पैदा नहीं होता है। सदाचार और सद्व्यवहार का पालन करके जीवन जीने में बुद्ध ने सामाजिक सुख की गारंटी बतलायी है, जो शत प्रतिशत सही है। सामाजिक दुखों से ही इन्सान एक दूसरे से परेशान रहता है। समाज में इन्सान सदाचार और सद्व्यवहार का पालन करके ही दूसरे इन्सान को सुख भी दे सकता है और उससे सुख प्राप्त हो सकता है। बुद्ध के द्वारा बताया गया पंचशील की बात सर्वकालीक और सर्वव्याप्त सत्य है। जो इनसान इसका पालन करता है वह खुद भी सुखी रहता है और दूसरे को भी सुख देता है। पंचशील सुख का भंडार है।

प्राय: अन्य सभी धर्म अंध विश्वासों पर टिके हुए है लेकिन बौद्ध धम्म में देखने, जानने और समझने पर ही जोर दिया गया है। निष्ठा और विश्वास पर नहीं, विश्वास का प्रश्न वहाँ उठता ही नहीं जहाँ व्यक्ति स्वयं देखता और समझता है। मैं अपनी मुट्ठी में एक रत्न रखा हूँ। ऐसा कहता हूँ तुम स्वयं रत्न को देख लो, विश्वास का सवाल ही पैदा नहीं होता। बुद्ध कहते हैं कि वह भिक्खु जो देखता है और समझता है वही अपनी अशुद्धताओं को नष्ट कर सकता है। बुद्ध का उपदेश है कि आओ, देखो तथा समझो। यह नहीं कि आओ और विश्वास करो। जब लोग दूसरे व्यक्ति की कट्टरता, असहिष्णुता, इसकी परम्परा और अधिकार को बिना शंका किए विश्वास करने पर विवश थे तब लोगों ने बुद्ध की शिक्षाओं को समझा और माना। उनके उपदेश मनुष्य को सुरक्षा, शांति देते थे। बुद्ध की शिक्षा न

तो निराशावादी है और न आशावादी। यदि वह कुछ है तो यथार्थवादी है। यह वस्तुगत रूप में हमें उचित मार्ग बताता है कि तुम क्या हो और तुम्हारे चारों तरफ की दुनिया क्या है और शांति, स्थिरता, सुख और पूर्ण स्वतंत्रता का मार्ग दिखाता है। यह एक बुद्धिमान एवं वैज्ञानिक डाक्टर है जो संसार की बीमारियों के लक्षणों को ठीक-ठीक पहचान कर रोग का निदान करता है एवं इसके कारणों और प्रकृति को समझकर साहसपूर्वक इसका इलाज करता है और रोगी को बचा लेता है।

बुद्ध का नैतिक आदर्शवाद

बुद्ध को 'तत्वज्ञान सम्बन्धी मामलों में बहुत कम रुचि थी। उन्होंने अपने समय के उन दार्शनिकों को लताड़ा, जो ब्रह्म, निरपेक्ष शक्ति और मनुष्य के सम्बन्ध को दैविक सत्ता से जोड़ने की कल्पनाओं में व्यस्त थे। बुद्ध ने सामान्यत: स्वीकृत संसार के दृष्टिकोण को ही मान लिया, जिसमें अनेक व्यक्तिगत रूप में मिलने वाले प्राणी हैं। ये सब प्राणी कार्य-कारण के नियम के अन्तर्गत आते हैं, अर्थात् कर्म का सिद्धान्त सब पर लागू होता है, जिसकी व्याख्या बुद्ध ने शारीरिक दृष्टि की तुलना में नैतिक भाव को लेकर अधिक की।

निष्कर्ष :

बुद्ध की त्रिशरण, पंचशील और अष्टांगिक मार्ग के सिद्धान्त को ग्रहण करके मनुष्य सुखी रह सकता है और विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है। मनुष्य में मानसिक गुलामी को त्याग कर उनमें चेतना पैदा की जा सकती है। उन्होंने मानव का नये किस्म से साक्षात्कार किया था तथा बिना एक बूंद खून बहाए विश्व-शांति की स्थापना की। बुद्ध ने स्वतंत्रता, समानता, मैत्री और बन्धुत्व के आधार पर सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था की नींव डाली। उन्होंने मनुष्य के उन सभी विकृत और अदृश्य बन्धनों को अपने उपदेशों से काट दिया जो आजतक धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विधानों एवं परम्पराओं से जकड़े हुए थे। उन्होंने कहा कि सभी मनुष्य एक समान हैं। कोई भी मनुष्य अपनी बुद्धि और विवेक का प्रयोग कर समाज में किसी भी पद और प्रतिष्ठा को प्राप्त कर सकता है। हर व्यक्ति स्वयं अपना भाग्य-निर्माता स्वयं है। विश्व-शांति की स्थापना में बौद्ध धर्म अतीत में योगदान देनेवाला साधन रहा है। इस समय भी और आगे भी रहेगा। "बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय" की भावना से अनुप्राणित होते हुए मूल्य शिक्षा का आशय ऐसे ही मूल्य से होना चाहिए जो सभी के कल्याण में सहभागी बने। मूल्य शिक्षा में शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक, मानवीय, बौद्धिक, वैज्ञानिक, लोकतांत्रिक बौद्ध दर्शन में समाहित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. त्रिपाठी, हवलदार (1960) : मूल्य शिक्षा एवं बौद्ध धर्म और विहार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
2. उपाध्याय, रामजी (1966) : प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका, देवभारती एवं लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. देवराज, एन0 के0 (1979) : बौद्ध दर्शन में मूल्य शिक्षा एवं भारतीय संस्कृति, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान (हिन्दी समिति प्रभाग, लखनऊ)
4. सिंह, रघुनाथ (1990): मूल्य शिक्षा एवं बुद्ध कथा, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी।
5. डॉ. रामसकल पाण्डेय, मूल्य शिक्षा एवं बौद्ध दर्शन, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 1992. पृ0 12.
6. डॉ0 सूरज, नरेन (1994) : बुद्धिष्ट सोशल एण्ड मोरल एजुकेशन, प्राइमल पब्लिकेशन, कलकत्ता।
7. कौसल्यायन, भदन्त आनन्द (1995): भगवान बुद्ध और उनका धम्म, सिद्धान्त प्रकाशन, बम्बई।
8. उपाध्याय, बलदेव (1996) : बौद्ध दर्शन, मोती लाल बनारसी दास, वाराणासी।
9. हिरियन्ना, एम0 (1997) : मूल्य शिक्षा एवं भारतीय दर्शन की रूपरेखा, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0, नई दिल्ली।
10. आर. एम. मेहता, मूल्य शिक्षा बौद्ध दर्शन के विभिन्न आयाम, वाणी प्रकाशन, वाराणसी, 1998. पृ0 -22.
11. एस.राधाकृष्णन, मूल्य शिक्षा की प्रासंगिकता, राजपाल एण्ड सन्स,दिल्ली, 1998. पृ0 42.
12. बौद्ध कमल प्रसाद (2022) समकालीन भारत की शिक्षा के विविध आयाम, प्रकाशक, बुद्ध मिशन ऑफ इण्डिया, पटना।